Vol.: 21 (January–June 2022)

ISSN No. : 2277-4270
UGC Care Listed Journal

आम्नायिकी

एकविंशोऽङ्कः, जनवरी-जून, २०२२
षाण्मासिकी अन्ताराष्ट्रिया मूल्याङ्कितशोधपत्रिका
(विश्वविद्यालयानुदानायोग-नईदिल्लीद्वाराअनुमोदिता)

प्रधानसम्पादकः
प्रोफेसरहरीश्वरदीक्षितः

सहसम्पादकाः
प्रोफेसरपतञ्जलिमिश्रः डॉ० उदयप्रतापभारती, डॉ० पुष्पादीक्षितः,
डॉ० शान्तिलाल सालवी, प्रो०(डॉ.)देवेन्द्रनाथपाण्डेयः,
डॉ० राकेशकुमारमिश्रः, डॉ० आलोकप्रतापसिंहविसेनः

प्रकाशकः
प्रोफेसरहरीश्वरदीक्षितः
वेदविभागः
संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसङ्कायः
काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी-२२१००५

Scanned with OKEN Scanner

सौन्दर्य और संघर्ष के कवि : केदारनाथ अग्रवाल

डॉ. गौरी त्रिपाठी*

हमारे साहित्य में नदियां कभी-कभी किसी कविता या कवि से याद रह जाती हैं जैसे केन नदी और बेतवा। इन नदियों का सौंदर्य अगर देखना हो तो आप हिंदी कविता में केदारनाथ अग्रवाल के पास जा सकते हैं। प्रगतिवादी हिंदी कविता के एक अलग तरह के कवि केदारनाथ अग्रवाल जो प्राकृतिक सौंदर्य, रूप-गन्ध के सौंदर्य वर्णनों के साथ-साथ वर्ग की भी कविता लिखते हैं। एक हाथ में फूल और कोमलता तो दूसरे हाथ में हथौड़ा और संघर्ष का आवाहन, दोनों का संतुलन आपको केदारनाथ अग्रवाल की कविता में मिलेगा। मुझे तो प्रयोगवाद सबसे ज्यादा प्रगतिवादी कवियों के यहां ज्यादा दिखाई पड़ता है कविता और जीवन की जितनी विविधता और प्रयोग यहां है वह शायद और कहीं नहीं हैं। जिस व्यक्ति के अंदर विद्रोह की जितनी ज्यादा चेतना होगी रोमांटिक भाव भी उतना ही ज्यादा होगा। प्रकृति हमें प्रेम करना और विद्रोह करना दोनों सिखाती है। पहली कविता के रूप में हमें जो संग्रह मिलता है उसका नाम है 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' लेकिन इसी कोमलता के साथ-साथ वे मार्क्सवादी दर्शन को अपनी कविता और जीवन का आधार मानकर के चलते थे। जहां जनसाधारण की संवेदना सबसे ऊपर रहती थी। वे स्वाभाविक तौर पर एक प्रगतिवादी कवि थे जो प्रयास करके नहीं बल्कि अनायास ही आम लोगों के लिए तत्पर रहते थे। हम क्रांति केवल हथौड़े और बंदूक के बल पर नहीं कर सकते। अपने गांव जवार की आत्मीयता पर गहरा विश्वास रख कर भी हम तमाम मोर्चे संभाल सकते हैं। प्रगतिशीलता क्रांति धर्मिता हमें प्रकृति से जोड़ती है समाज को बदलने की बात तो है लेकिन वह अपनी केन नदी को भी उदास नहीं देख सकते-

आज नदी बिल्कुल उदास थी।
सोई थी अपने पानी में,
उसके दर्पण पर -
बादल का वस्त्र पड़ा था।
मैंने उसको नहीं जगाया
दबे पांव घर वापस आया।[1]

मार्मिकता पूरे समाज को जोड़ देती है, कवि के पास तो कविता का ही सहारा होता है जिससे वह पूरे समाज को जोड़ता है। अनुभूति के स्तर पर सब को एक साथ लेकर के आता है। केदारनाथ अग्रवाल की कविताएं नदियों की तरह सतत प्रवाह मान दिखाई पड़ती हैं जो लगातार एक दूसरे को डांटती फटकारती चलती हैं।

आमतौर पर लोग मानकर के चलते हैं कि कविता में जिसके यहां विद्रोह या हास्य का स्वर सुनाई देगा उसके यहां से प्रेम और संवेदनाएं गायब रहेंगी लेकिन केदारनाथ अग्रवाल इसके बड़े उदाहरण हैं। हम सारी दुनिया से तो जुड़ सकते हैं लेकिन अपने आसपास से हमेशा जुड़े रहना बहुत बड़ी बात होती है। केदारनाथ अग्रवाल के बारे में यह बात बिल्कुल सही कही जा सकती है। वे जीवन भर अपनी केन नदी और अपने अंचल से प्रेम करते

* एसोशिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

Scanned with OKEN Scanner